गोरखपुर महानगर में भूमि उपयोग की आधुनिक प्रवृत्तियाँ

पूजा शर्मा
शोधार्थी, भूगोल विभाग, डी0डी0यू0 गोरखपुर
Email-poojaji826@gmail.com

सारांश

किसी नगर का भूमि उपयोग वहाँ के सामाजिक– आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण प्रतिबिम्बि होता है, जिसके आकर्षण से नगर में जनसंख्या आप्रवास की धारा प्रवाहित होती है। भूमि उपयोग अर्थात् विभिन्न क्रिया कलापों के लिये समर्पित भूमि जो नगरीय कार्य कलापों के लिये समर्पित होती है। किसी क्षेत्र की सम्पूर्ण भूमि का विभिन्न कार्यो के लिये किया जाने वाला उपयोग 'भूमि उपयोग' कहलाता है। शाब्दिक अर्थ में भूमि उपयोग भूमि संसाधन के उपयोग का समानार्थी है। सामान्यतया भूमि संसाधन उपयोग का परिवर्तनशील प्रतिरूप विभिन्न कारकों के प्रभाव के परिणाम स्वरूप दीर्घकालीन प्रक्रिया द्वारा निर्मित होता है। इस अर्थ में मानवीय प्रभावों से युक्त भूमि क्षेत्र के लिए 'भूमि उपयोग' शब्द व्यवहार में लाया गया है।

भूमि प्रयोग समय की एक अल्प अवधि है जबकि भूमि उपयोग मानवीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपनाई गई एक लम्बी अवधि है। मानव अपनी आवश्यकतानुसार भूमि के उचित एवं अनुचित उपयोग का विश्लेषण करता है। भूमि उपयोग मानवीय क्रियाकलपों से संबंधित है। प्राथमिक रूप में भूमि क्षेत्र मानव प्राकृतिक होता है। कालान्तर में मानव अपनी आवश्यकतानुसार उसका उपयोग करता है। धीरे–धीरे विभिन्न सांस्कृतिक कारको से प्रभावित होकर भूमि क्षेत्र का प्राकषतिक स्वरूप लुप्त हो जाता है। भूमि उपयोग एक क्रियाशील अवधारणा है, जो क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं के अनुरूप सम्पन्न होती है।

भूमि उपयोग का महत्व

भूमि उपयोग के माध्यम से प्रति इकाई भूमि क्षेत्र से अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सकता है। काल क्रमानुसार विभिन्न प्रकार की भूमि क्षेत्रफल में परिवर्तन होता रहता है। किसी क्षेत्र की भूमि सर्वत्र एक समान नहीं होती है अपितु यह प्राकृतिक तत्वों से प्रभावित होकर पर्वत, पठार, मैदान आदि रूपों में होती है। साथ ही मानवीय कारकों के प्रभाव के कारण इन प्राकृतिक भू–खण्डों में परिवर्तन होता रहता है। भूमि के विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्गत वर्गीकरण द्वारा विभिन्न प्रकार के भूमि क्षेत्रों में, भूमि उपयोग सम्भावनाओं का पता लगाया जा सकता है, जिससे जनसंख्या के संदर्भ में कृषि एवं अन्य आर्थिक विकास हेतु भूमि उपयोग का समुचित नियोजन प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्राचीन नगरों में गृहों एवं जनसंख्या की अत्यधिक सघनता निवास गृहों की न्यूनता,

अवस्थिति संकरी, टेढ़ी–मेढ़ी गलियों के कारण यातायात की समस्या असन्तोषजनक स्वास्थ्य एवं चिकित्सालयों की सेवाएँ, खुले स्थानों की कमी, उद्योग–धन्धों का अवैज्ञानिक वितरण तथा जनोपयोगी सुविधाओं एवं संस्थाओं की कमी आदि कारणों से नगरीय जीवन रूग्ण होता जा रहा है।

वर्तमान में नगर नियोजन की प्रक्रिया में अंतर आया है क्योंकि नगर जनसंख्या पुंज होने के साथ विविध आर्थिक–सामाजिक–राजनीतिक कार्यों के केन्द्र बन गये हैं नगर नियोजन के द्वारा नगर की उपलब्ध भूमि का उत्कृष्टम उपयोग करने की योजना बनती है। वह सभी नगरवासी चाहें वो गरीब हो अथवा अमीर के लिए एक स्वस्थ नगरीय पर्यावरण विकसित करता है। जिसमें नगरवासियों के रहने, खेलने, मनोरंजन, आर्थिक व सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने का भरपूर अवसर मिल सके। इसका मुख्य उद्देश्य नगरीय जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

आंकड़ो का स्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में भूमि उपयोग प्रतिरूप को ज्ञात करने के लिए मुख्यतः द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विधितंत्र का प्रयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र 'गोरखपुर महानगर में भूमि उपयोग' से सम्बन्धित वर्ष 1971 तथा 2001 के आंकड़ों को एकत्रित कर भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने हेतु उपयुक्त तालिका, मानचित्र व ग्राफ विधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

गोरखपुर नगर का नाम योगी गोरक्षनाथ के नाम पर पड़ा है। भौगोलिक दर्षष्टिकोण से मध्य गंगा मैदान के मुख्य उत्तर में उत्तर–प्रदेश प्रान्त के पूर्वोत्तर में स्थित यह नगर राप्ती व रोहिन नदियों के संगम पर उनके बायें किनारे पर अवस्थित है। गोरखपुर नगर अपने नाम के मण्डल, जिला और तहसील का मुख्यालय है। जनसंख्या के दर्षष्टिकोण से पूर्वी उत्तर–प्रदेश का वाराणसी (36, 76, 841) के बाद सबसे बड़ा नगर है, यह नगर पूर्वी उत्तर प्रदेश का वाणिज्यिक एवं व्यापारिक केन्द्र होने के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कर्षतिक एवं राजनैतिक केन्द्र भी है। 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की कुल जनसंख्या 6,73,446 है। इस नगर में समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से शिक्षा एवं रोजगार के लिये स्थाई एवं अस्थाई आव्रजकों की अधिक संख्या होने के कारण यह नगर बड़ी तीव्र गति से प्रत्येक दिशाओं में विस्तारित हो रहा है। नगर का क्षेत्रफल लगभग 137 वर्ग किमी0 है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से यह नगर 70 वार्डो में विभक्त है।

(चित्र–1)

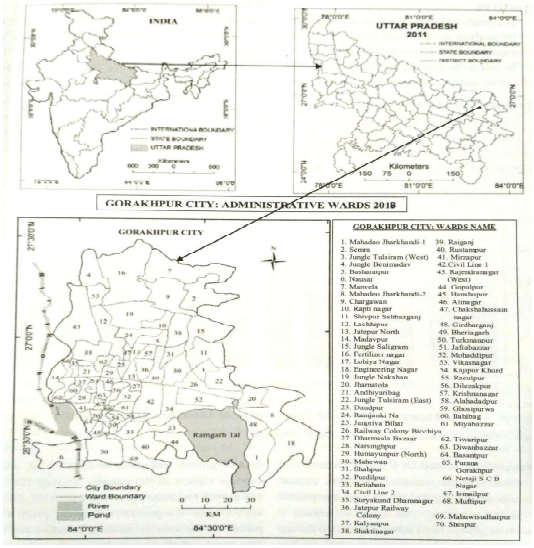

भूमि उपयोग गत्यात्मकता –

गोरखपुर महानगर में भूमि उपयोग का प्रतिरूप स्पष्ट रूप से संक्रमण अवस्था में है। नये सम्पर्क मार्गो के उद्‌भव और नगर भूमि के मूल्य में वृद्धि के कारण खेती योग्य भूमि का द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यो में परिवर्तन हो रहा है। यद्यपि नगर के केन्द्रीय भाग में जन–संकुलन एवं कार्यों का दबाव बढ़ रहा है, केन्द्रीय वाणिज्य क्षेत्र (सी0बी0डी0) में वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक कार्यों का संकेन्द्रण हुआ है।

मिश्रित भूमि उपयोग इस नगर की एक प्रमुख विशेषता हैं।

गोरखपुर महानगर का भू–उपयोग

क्रमांक	भू–उपयोग	वर्ष 1971		वष 2001	
		क्षेत्रफल (हे0) में	कुल विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	क्षेत्रफल (हे0) में	कुल विकसित क्षेत्र का प्रतिशत
1–	आवासीय	131.16	83.72	4103.30	72.10
2–	व्यवसायिक	35.21	2.18	173.20	3.06
3–	औद्योगिक	56.05	3.46	445.00	7.82
4–	राजकीय	98.34	6.08	161.00	2.83
5–	सार्वजनिक,अर्द्धसार्वजनिक एवं उपयोगिताएं सेवाएं	350.01	21.63	398.82	7.01
6–	पार्क एवं खुले क्षेत्र	47.35	2.03	291.30	
7–	यातायात एवं परिवहन	N.A.	N.A.	117.20	
	योग–	**1618.12**	**100.00**	**4680.10**	

स्रोत– विकासोन्मुख महानगर, गोरखपुर (दर्षष्टि पत्र)

	1971		2001	
	Total Area (ha)	% of Total Area	Total Area (ha)	% of Total Area
Residential	131.16	83.72	4103.3	72.1
Commercial	35.21	2.18	173.2	3.06
Industrial	56.05	3.46	445	7.82
Administrative	98.3	6.08	161	2.83
Public and Semi Public and Utilisisation sector	350.01	21.63	398.82	7.01
Park and Open Space	47.35	2.03	291.3	
Transport and Communication	N.A.		117.2	
Total	1618.2	100	4680.1	

	1971	2001
Residential	83.72	72.1
Commercial	2.18	3.06
Industrial	3.46	7.82
Administrative	6.08	2.83
Public, Semi Public and Utilisisation sector	21.63	7.01
Park and Open Space	2.03	
Transport and Communication		
Total	100	

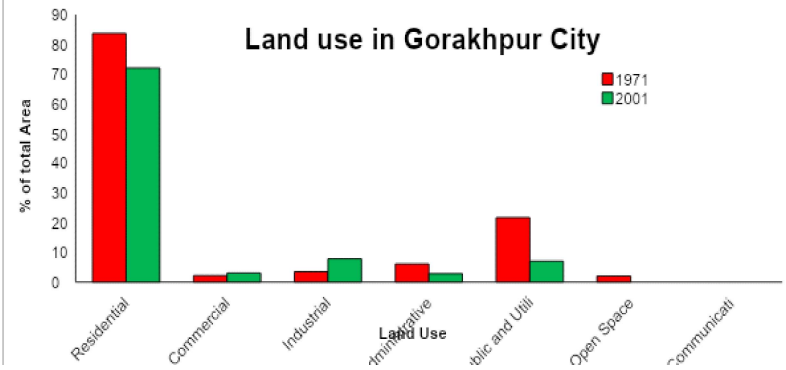

आवासीय क्षेत्र –

अन्य भारतीय नगरों की तरह गोरखपुर नगर का सबसे बड़ा आवासी है, जिसका प्रभाव नगर के विकास तथा अन्य क्षेत्रों पर पड़ा है। तालिका से ज्ञात होता है कि वर्ष 2001 में आवासीय क्षेत्र के अधीन 4103.30 हेक्टेयर भूमि जो कुल विकसित क्षेत्र को 72.10 प्रतिशत है। जबकि वर्ष 1971 के भू–उपयोग के अनुसार इस वर्ग में प्रयुक्त भूमि 1031.16 हेक्टेयर था जो कुल विकसित भूमि का 63.72 प्रतिशत था। स्पष्ट है कि नगर में आवासीय क्षेत्रों का विस्तार बहुत तेजी से हो रहा है। गोरखपुर महानगर में व्यवसायिक एवं आवासी क्षेत्र सड़कों के किनारे संलग्न रूप में देखेन को मिलते हैं। व्यवसायिक प्रतिष्ठानों ऊपरी एवं पृष्ठ भाग मुख्य रूप से आवासीय क्षेत्र है। नगर के मध्यवर्ती भागों में बाहरी भागों की अपेक्षा जनसंख्या का संकेन्द्रण अधिक हुआ है। नगर का प्राचीन बसाव मुख्य रूप से गोरखपुर–लखनऊ रेलमार्ग के दक्षिण तथा राष्ट्रीय राजमार्ग

नं0 28 के उत्तर तथा कुछ भू–भाग गोरखपुर–आनन्द नगर रेलवे लाईन के पश्चिम वाले क्षेत्र में है। नगर के नवविकसित एवं विकासशील आवासी क्षेत्र राष्ट्रीय राजमार्ग नं0 28 के पादरी बाजार तक, देवरिया मार्ग पर नन्दानगर तक विस्तारित हो गया है। इन क्षेत्रों में बड़–बड़ी कालोनियों का निर्माण व्यक्तिगत, गोरखपुर विकास प्राधिकरण या आवास–विकास परिषद् द्वारा विकसित किया गया है।

व्यवसायिक क्षेत्र

गोरखपुर नगर सरयूपार मैदान का एक प्रमुख व्यवसायिक केन्द्र है। वर्ष 2001 में व्यवसायिक क्षेत्र के अन्तर्गत 173.20 हेक्टेयर भूमि जो कुल विकसित क्षेत्र का 3.05 प्रतिशत है जबकि 1971 के भूमि उपयोग के आंकड़ों के अनुसार व्यवसायिक क्षेत्रों के अन्तर्गत प्रयुक्त भूमि 35.21 हेक्टेयर जो कुल विकसित क्षेत्र का 2.18 प्रतिशत था। अतः स्पष्ट है कि नगर में वाणिज्यिक क्रिया कलाप बढ़ रहा है, जिसका प्रमुख कारण इस नगर द्वारा समस्त सरयूपार के व्यापारियों को थोक एवं उच्चस्तरीय वाणिज्यिक सुविधायें प्रदान करना है। व्यापारिक प्रतिष्ठान अधिकांशतः सड़को के किनारे–किनारे रेखीय प्रतिरूप में विकसित हुए है।

औद्योगिक क्षेत्र – किसी भी नगर के विकास में उद्योगों की प्रमुख भूमिका होती है। वर्ष 2001 के आंकड़ो के अनुसार 12 वृहद तथा शेष मध्यम एवं लघु श्रेणी के उद्योग कार्यरत हैं जिनमें से अधिकांश नगर के सघन आवासीय क्षेत्रों में ही स्थित है। उर्वरक निगम नगर से 8 किमी0 दूर है। गोरखपुर नौतनवॉ मार्ग पर नियोजित औद्योगिक प्रखण्ड नगर से 3 किमी0 दूर स्थित है, जिनमें अनेक उद्योग कार्यरत है। लघु उद्योगों में हथकरधा उद्योग प्रमुख है जो गोरखपुर के आस–पास आवासीय क्षेत्रों में ही मौजुद है। रेलवे स्टेशन के उत्तर में रेलवे लोको वर्कशाप है जो नगर के सबसे बड़ी औद्योगिक इकाई है। नगर के पूर्वी भाग में गोरखपुर छावनी के निकट रेलवे सिंग्नल वर्कशाप तथा ताप विद्युत गष्ह जो अब बन्द पड़ा है स्थित है।

प्रशासनिक क्षेत्र

गोरखपुर नगर एक प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र है। यहॉ विभिन्न शासकीय तथा गैर शासकीय कार्यालय स्थित है। गोरखपुर नगर में मण्डलीय मुख्यालय के साथ पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय भी स्थित है। नगर में प्रशासनिक दृष्टि से बहुत से सरकारी प्रतिष्ठान कार्यरत है। वर्ष 2001 के आंकड़ो के अनुसार राजकीय या प्रशासनिक उपयोग में आने वाला कुल क्षेत्रफल 161. 00 हेक्टेयर जो कुल विकसित क्षेत्रों को 2.83 प्रतिशत है, जबकि वर्ष 1971 में इस वर्ग में प्रयुक्त भूमि 94.34 है, जो कुल विकसित क्षेत्र का 6.08 प्रतिशत था।

सार्वजनिक अद्धसार्वजनिक एवं उपयोगिता

सेवाओं के क्षेत्र

किसी भी नगर में इनकी पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता से नगरीय जीवन स्वच्छ, शुद्व एवं सुविधा सम्पन्न होता है। सामान्यता नागरिक सुविधाओं हेतु आवश्यक सुविधाएँ एवं सेवाएँ इस उपयोग के अन्तर्गत आती है जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति, मलजल निकास व्यवस्था, पुलिस स्टेशन आदि सम्बन्धी सुविधायें सम्मिलित होती है।

पार्क एवं खुले क्षेत्र

नगर में स्वस्थ्य नगरीय जीवन तथा नागरिकों के मानसिक विकास हेतु मनोरंजन सुविधा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अन्तर्गत पार्क, खुले स्थल, क्रीड़ास्थल, पुस्तकालय, क्लब–थियेटर, सिनेमाहाल, दूरदर्शन केन्द्र आदि सम्बन्धी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। वर्ष 2001 में इस वर्ग में प्रयुक्त भूमि 291.20 हे0 जो कुल विकसित क्षेत्र का 5.12 प्रतिशत है। जबकि वर्ष 1971 में इस वर्ग में प्रयुक्त भूमि 43.35 है जो कुल विकसित क्षेत्र का 2.93 प्रतिशत था। रेलवे का कुल 34 एकड़ का गोल्फ ग्राउण्ड विश्वविद्यालय के पूरब में रेलवे स्टेशन के समीप क्षेत्रीय क्रीड़ागन एवं पुलिस परेड स्थल है। नगर के पुराने आवासीय क्षेत्रों तथा नये आवासीय क्षेत्रों में भी अभी खुले स्थानों की कमी है।

यातायात एवं परिवहन –नगर के आर्थिक–सामाजिक विकास में यातायात एवं परिवहन व्यवस्था शरीर की धमनियों की तरह कार्य करता है। गोरखपुर नगर के मार्गो के अत्यन्त सघन होने के कारण यातायात प्रभावित होता है और नगर के अन्दर सड़कों के अच्छे ढंग से रख रखाव न होने के कारण भारतीय वाहन में काफी कठिनाई होती है। वर्ष 2001 के आंकड़ों के अनुसार इस वर्ग में प्रयुक्त भूमि 117.10 हे0 जो कुल विकसित क्षेत्र को 2.07 प्रतिशत है। राजकीय कार्यालयों में प्रयुक्त भूमि तथा सार्वजनिक एवं उपयोगितायें सेवाओं के अन्तर्गत प्रयुक्त भूमि का प्रतिशत नगर में कम हो रहा है जबकि पार्क एवं खुले क्षेत्रों में प्रयुक्त भूमि का प्रतिशत भी क्रमशः घट रहा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि गोरखपुर महानगर के भूमि उपयोग प्रतिरूप में असमानता पाई जाती है। मिश्रित भूमि उपयोग इस नगर की प्रमुख विशेषताएं है। भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने के कारण भूमि का विखण्डन हो रहा है। अतः आज भूमि संसाधन का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक उपयोग आवश्यक हैं गोरखपुर महानगर में औद्योगिक–आजीविका में वृद्धि उल्लेखनीय है। सम्पूर्ण क्षेत्र में भावी विकास का स्परूप महानगर विकास प्राधिकरण द्वारा प्रस्तावित 'सम्पूर्ण नगर समूह' के लिए विकास प्रस्तावों पर आश्रित है।

अध्ययन क्षेत्र के पर्यावरणीय एवं सामाजिक आर्थिक दशाओं तथा संभावित भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विशिष्ट उपयोगों के लिए भूमि के निर्धारण की योजना बनाने की आवश्यकता है ताकि भूमि के प्रत्येक खण्ड का सदुपयोग हो सके तथा प्रति इकाई भूमि क्षेत्र से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए भूमि उपयोग नियोजन आवश्यक है। महानगर के विकास हेतु कुछ सीमित दिशाओं में ही अनुकूल भूमि की उपलब्धता होने एवं अन्य बाधा न होने के कारण विकास की प्रबल संभावना है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Gupta, D.P. (1998) *Gorakhpur City: its Urban Land Use : Problem and Planning*, Unpublished Ph.D. Thesis , Department of Geography BHU, Varanasi.

2. प्रीती कु0 (2015) *''मध्य प्रदेश में भूमि उपयोग प्रतिरुप'* संविकास संदेश, गोरखपुर Vol 23, No. I & II (Jan-June)
3. यादव हीरालाल, यादव लालबहादुर (डंतबी 2.14) *गोरखपुर नगर उपान्त की जनसंख्या विशेषताएं* उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर। Vol. 44, No.1
4. सेनवानी सुनीता, खान जेड़ टी (मच 2011) *''रायपुर नगर के भूमि उपयोग में परिवर्तन का प्रारूप''* उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर Vol. 41, No. 3
5. Goswami K.P. & Kumar Varun (June 2015) *"Urbanization and its Tmp act on Environment A case study of Gorakhpur city,* U.P." Uttar Bharat Bhoogol Patrika, Gorakhpur Vol. 45 (1)
6. यादव धर्मेन्द्र प्रताप और जमाल उमरा (जून 2015) *''गोरखपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि एवं बुनियादी सुविधाओं का विकास'* गोरखपुर अंक 45, No. 1
7. Varma. S.S. (1989) *Urbanization and Regional Development in India,* Chugh Publication Allahabad.
8. Tyagi Nutan (June 2015) *"Urban Spranal of Gorakhpur City"* Uttar Bharat Bhoogal Patrika, Val. 45 (1)
9. Vision Document for Gorakhpur city.